ध्येय IAS
most trusted since 2003

DAILY prePARE
Current affairs summary for prelims

26 October 2024

# भारत का अक्षय ऊर्जा लक्ष्य और सौर आयात

**सन्दर्भ:** भारत ने 2030 तक 500 गीगावाट अक्षय ऊर्जा क्षमता स्थापित करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है। यह लक्ष्य न केवल कार्बन उत्सर्जन को कम करने में महत्वपूर्ण है, बल्कि ऊर्जा की स्थायी मांग को पूरा करने में भी सहायक होगा।

- हालाँकि, ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (GTRI) ने देश की आयातित सौर उपकरणों, विशेष रूप से चीन से, पर भारी निर्भरता के बारे में चिंता व्यक्त की है। यह निर्भरता वार्षिक सौर आयात को लगभग 30 बिलियन डॉलर तक बढ़ा सकती है, जिससे अक्षय ऊर्जा लक्ष्यों को हासिल करने में चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं।

## सौर क्षमता की वर्तमान स्थिति:

- भारत की सितंबर 2023 तक सौर क्षमता 90.8 गीगावाट हैं, जोकि 2014 में 2.8 गीगावाट से एक उल्लेखनीय वृद्धि है। यह प्रगति देश की अक्षय ऊर्जा संसाधनों के विकास के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है।
- **वार्षिक आवश्यकता:** 500 गीगावाट लक्ष्य को पूरा करने के लिए, भारत को अपनी वार्षिक सौर दर को 65-70 गीगावाट के बीच बढ़ाने की आवश्यकता है। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि सौर ऊर्जा, अक्षय ऊर्जा के मिश्रण में प्रमुख भूमिका निभाए।
- **चीनी आयात पर निर्भरता:** वित्त वर्ष 2023-24 में, भारत ने 7 बिलियन डॉलर मूल्य के सौर उपकरण आयात किए, जिनमें से 62.6% आयात चीन से हुए। यह आंकड़ा भारत की सौर घटकों के लिए विदेशी आपूर्तिकर्ताओं पर निर्भरता को उजागर करता है।
- **चीन का प्रभुत्व:** चीन पॉलीसिलिकॉन उत्पादन के 97% और सौर मॉड्यूल के 80% को नियंत्रित करता है, जिससे भारत के लिए प्रतिस्पर्धा करना और अनुकूल मूल्य निर्धारण हासिल करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

## घरेलू सौर विनिर्माण में चुनौतियाँ

- **वर्तमान विनिर्माण परिदृश्य:** भारत का सौर विनिर्माण क्षेत्र मुख्यत: आयातित घटकों के एकत्रीकरण पर निर्भर है, जिसमें लगभग 90% सौर विनिर्माण इसी प्रक्रिया से जुड़ा हुआ है। इस स्थिति के कारण, सौर उत्पादों में केवल 15% स्थानीय मूल्यवर्धन होता है, जिससे घरेलू उत्पादन के संभावित लाभों में कमी आती है।
- **अत्यधिक कम मूल्य का प्रभाव:** चीनी कंपनियाँ अत्यधिक कम मूल्य में व्यापार कर रही हैं, जिससे भारतीय निर्माताओं की व्यावसायिकता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है और प्रतिस्पर्धी सौर विनिर्माण उद्योग की स्थापना के स्थानीय प्रयासों को नुकसान पहुँचता है।

## सरकारी पहल:

- स्थानीय विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार ने उत्पादन से जुड़े प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना के माध्यम से 4.5 बिलियन डॉलर से अधिक का निवेश किया है। इस योजना का उद्देश्य घरेलू उत्पादन को प्रोत्साहित करना और आयात पर निर्भरता को कम करना है।
- चीनी आयात पर निर्भरता को कम करने के लिए, सरकार ने सौर मॉड्यूल पर 40% और सौर सेल पर 25% सीमा शुल्क लगाया है। हालाँकि, भारत-आसियान मुक्त व्यापार समझौते के तहत आसियान देशों से आयात इन शुल्कों से मुक्त है, जिससे स्थानीय निर्माताओं को संरक्षण देने के प्रयास जटिल हो जाते हैं।

## जीटीआरआई द्वारा सिफारिशें:

- **अपस्ट्रीम उत्पादन में निवेश:** एक आत्मनिर्भर आपूर्ति श्रृंखला बनाने के लिए पॉलीसिलिकॉन और वेफर जैसे आवश्यक घटकों के घरेलू विनिर्माण पर ध्यान देना चाहिए।
- **प्रमुख सामग्रियों का स्थानीय उत्पादन:** विनिर्माण को बढ़ावा देने और आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए एल्युमीनियम फ्रेम और ग्लास जैसी सामग्रियों के लिए स्थानीय उद्योग स्थापित करें।
- **अनुसंधान और विकास (आरएंडडी) को बढ़ावा:** नवाचार को बढ़ाने और विनिर्माण प्रक्रियाओं में सुधार के लिए आरएंडडी में निवेश करना आवश्यक हैं, जिससे स्थानीय निर्माताओं को वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा करने में मदद मिलेगी।
- **सरकारी सहायता:** निवेश और विकास को प्रोत्साहित करने के लिए पीएलआई योजना का विस्तार करें और स्थानीय विनिर्माण के लिए अतिरिक्त प्रोत्साहन प्रदान करें।
- **वैश्विक भागीदारी:** भारत को बड़े पैमाने पर सौर विनिर्माण सुविधाएँ स्थापित करने, ज्ञान हस्तांतरण और उन्नत तकनीकों तक पहुँच की सुविधा के लिए अमेरिका, यूरोपीय संघ और जापान जैसे देशों के साथ सहयोग करना चाहिए।

## निष्कर्ष:

2030 तक अपने 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्य को प्राप्त करने के

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

लिए, भारत को आत्मनिर्भर सौर विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने को प्राथमिकता देनी चाहिए। स्थानीय उत्पादन में निवेश, अनुसंधान और विकास क्षमताओं को बढ़ाना और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को प्रोत्साहित करना आयात पर निर्भरता को कम कर सकता है और नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों को प्रभावी ढंग से पूरा करने में मदद करेगा। एक स्थायी ऊर्जा भविष्य की ओर बढ़ने के लिए रणनीतिक योजना, निवेश और एक लचीले सौर विनिर्माण क्षेत्र के निर्माण के लिए प्रतिबद्धता आवश्यक है।

## कजान शिखर सम्मेलन और ब्रिक्सः बहुपक्षवाद का एक नया युग

**संदर्भः** हाल ही में रूस के कजान में विकास और सुरक्षा को बढ़ावा देने हेतु बहुपक्षीय सहयोग पर केंद्रित ब्रिक्स शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन का मुख्य परिणाम 'कजान घोषणा' रही, जोकि एक व्यापक दस्तावेज के रूप में उभरी। यह घोषणा सदस्य देशों के बीच सहयोग के महत्व को रेखांकित करती है और वैश्विक मामलों में एकीकृत दृष्टिकोण को व्यक्त करती है।

- घोषणा में 'न्यायसंगत वैश्विक विकास और सुरक्षा के लिए बहुपक्षवाद को मजबूत करना' विषय पर विशेष बल दिया गया है। इसमें शांति के संवर्धन, एक निष्पक्ष अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की स्थापना तथा सतत विकास पहलों को प्रोत्साहित करने की प्रतिबद्धताओं को प्रमुखता दी गई है।
- रूस ने 2022 से रूसी बैंकों पर लागू प्रतिबंधों के संदर्भ में स्विफ्ट नेटवर्क के विकल्प के रूप में ब्रिक्स के नेतृत्व वाली भुगतान प्रणाली की आवश्यकता को रेखांकित किया। इसके अतिरिक्त सम्मलेन में पश्चिम एशिया में बढ़ते संघर्ष पर भी चर्चा की गयी।
- शिखर सम्मेलन के दौरान, ब्रिक्स राष्ट्रों ने ब्रिक्स अनाज एक्सचेंज और ब्रिक्स (पुनः) बीमा कंपनी की स्थापना जैसी अभिनव पहलों को आगे बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की। इसके अतिरिक्त, शिखर सम्मेलन में एक नई 'ब्रिक्स भागीदार देश' श्रेणी की शुरुआत की गई, जिससे अन्य राष्ट्र ब्रिक्स के साथ सहयोगी परियोजनाओं में शामिल हो सकें।
- वैक्सीन अनुसंधान को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ब्रिक्स आरएंडडी वैक्सीन केंद्र की स्थापना की घोषणा की गई। साथ ही, अंतर्राष्ट्रीय बिग कैट्स एलायंस के लिए भारत के प्रस्ताव को भी एक महत्वपूर्ण योगदान के रूप में स्वीकार किया गया।

### ब्रिक्सः

- ब्रिक्स, जिसका अर्थ है ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका, पांच प्रमुख उभरती अर्थव्यवस्थाओं का गठबंधन है। 'ब्रिक' शब्द को पहली बार 2001 में ब्रिटिश अर्थशास्त्री जिम ओशनील ने इन उभरती अर्थव्यवस्थाओं का वर्णन करने के लिए पेश किया।
- 2009 में औपचारिक शिखर सम्मेलन की शुरुआत के बाद, 2010 में दक्षिण अफ्रीका का शामिल होना ब्रिक्स के विस्तार को दर्शाता है। हाल ही में, गठबंधन का विस्तार करते हुए अर्जेंटीना, इथियोपिया, मिस्र, ईरान, सऊदी अरब और यूएई को शामिल किया गया है।
- ब्रिक्स वैश्विक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण इकाई है, जोकि दुनिया की लगभग 41% आबादी, वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 24% और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का लगभग 16% प्रतिनिधित्व करती है।

### भारत के लिए ब्रिक्स का महत्वः

- ब्रिक्स, विकासशील देशों के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करता है, जिससे वे वैश्विक संस्थाओं में अपने विषय रख सकते हैं। यह भारत के लिए एक समानांतर विकल्प के रूप में कार्य करता है, जिससे पश्चिमी शक्तियों पर निर्भरता कम होती है।
- ब्रिक्स आर्थिक सहयोग और निवेश के अवसरों को बढ़ावा देता है, जिसमें न्यू डेवलपमेंट बैंक (NDB) के माध्यम से भारत के विकास लक्ष्यों के अनुरूप बुनियादी ढाँचे और सतत विकास परियोजनाओं के लिए आवश्यक धन मुहैया कराया जाता है।

### चुनौतियाँः

- ब्रिक्स को कई गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिनमें विभिन्न राष्ट्रीय एजेंडों का समावेश शामिल है। आतंकवाद और सीमा सुरक्षा के मुद्दों पर भारत का दृष्टिकोण हमेशा अन्य सदस्यों, विशेष रूप से चीन और रूस की प्राथमिकताओं के साथ मेल नहीं पाता, क्योंकि ये देश अपने भू-राजनीतिक हितों पर केन्द्रित रहते हैं।
- ब्रिक्स के भीतर चीन का बढ़ता प्रभाव, विशेष रूप से ईरान और सऊदी अरब जैसे देशों के शामिल होने से, संभावित रूप से चीन समर्थक रुख की ओर झुकाव की चिंताएँ उत्पन्न कर रहा है।
- मध्य पूर्वी देशों का समावेश भारत के कूटनीतिक संबंधों को जटिल बना सकता है। अंतर-ब्रिक्स व्यापार भी टैरिफ, विनियामक विसंगतियों और मुद्रा संबंधी मुद्दों के कारण बाधित है, जिससे भारत को इस समूह के भीतर व्यापार के अवसरों का पूर्ण लाभ उठाने में कठिनाई होती है।

### आगे की राहः

- ब्रिक्स में भारत की भागीदारी अपने राष्ट्रीय हितों को आगे बढ़ाने और बदलते भू-राजनीतिक परिदृश्य में वैश्विक शासन को प्रभावित करने के लिए आवश्यक है। एक संस्थापक सदस्य के रूप में, भारत ने उभरती अर्थव्यवस्थाओं के लिए ब्रिक्स को एक सहकारी मंच के रूप में बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयास किया है।
- यह संगठन भारत को व्यापार नेटवर्क में विविधता लाने, विदेशी निवेश आकर्षित करने और संयुक्त बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में शामिल होने के अवसर प्रदान करता है। रणनीतिक दृष्टिकोण से, भारत को अपने दीर्घकालिक विकास उद्देश्यों के अनुरूप महत्वपूर्ण पहलों का समर्थन करने के लिए न्यू डेवलपमेंट बैंक (NDB) के संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग करना चाहिए।

## वैश्विक जैव विविधता लक्ष्यः प्रगति और चुनौतियाँ

**सन्दर्भः** हाल ही में संयुक्त राष्ट्र जैव विविधता शिखर सम्मेलन, COP16 शुरू हुआ है, जिसमें लगभग 200 देशों ने भाग ले रहे है। वैश्विक जैव विविधता हानि को संबोधित करना इस सम्मेलन की एक महत्वपूर्ण प्राथमिकता के रूप में उभरा है।

- यह सम्मेलन 1992 के जैव विविधता सम्मेलन के तहत देशों की 16वीं बैठक है। यह सम्मलेन दो वर्ष पूर्व कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता रूपरेखा को अपनाने के बाद आयोजित किया गया है।

### कुनमिंग–मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता फ्रेमवर्कः

- कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता फ्रेमवर्क ने 2030 तक विश्व की 30% भूमि और समुद्र को संरक्षित करने का महत्वपूर्ण लक्ष्य निधारित किया है।
- हालाँकि, अक्टूबर 2024 तक 195 देशों में से केवल 31 ने ही अपनी राष्ट्रीय जैव विविधता रणनीति और कार्य योजनाएँ (NBSAP) प्रस्तुत की हैं, जोकि COP16 की शुरुआत में प्रस्तुत की जानी थीं। इनमें से अधिकांश कार्य योजनाएँ समृद्ध देशों से आती हैं, जबकि विकासशील देशों को अपनी योजनाएँ विकसित करने में संघर्ष करना पड़ रहा है।

### वित्तीय चुनौतियाँः

- COP16 में जैव विविधता संरक्षण के लिए धन की कमी एक प्रमुख चिंता का विषय है। शिखर सम्मेलन का उद्देश्य इन प्रयासों का समर्थन करने के लिए नई वित्तीय पहल स्थापित करना है। पिछली COP15 वार्ता में, वार्ताकारों ने विकासशील देशों की सहायता के लिए 2025 तक सालाना 20 बिलियन डॉलर जुटाने का लक्ष्य रखा था।
- हालाँकि, वर्तमान वित्तपोषण स्तर अपर्याप्त है; OECD ने 2022 में जैव विविधता के लिए केवल 15.4 बिलियन डॉलर आवंटित करने की रिपोर्ट दी है। यह कमी 2025 के लक्ष्य को प्राप्त करने के बारे में संदेह पैदा करती है।
- संरक्षण प्रयासों को वित्तपोषित करने के लिए डिजाइन किए गए वैश्विक जैव विविधता रूपरेखा कोष में सीमित योगदान देखा गया है, जिसमें आज तक केवल 238 मिलियन डॉलर ही जुटाए गए हैं।
- वित्तीय प्रतिबद्धता की यह कमी राष्ट्रीय रणनीतियों को लागू करने में एक महत्वपूर्ण बाधा प्रस्तुत करती है और समृद्ध देशों द्वारा अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने की आवश्यकता को उजागर करती है।

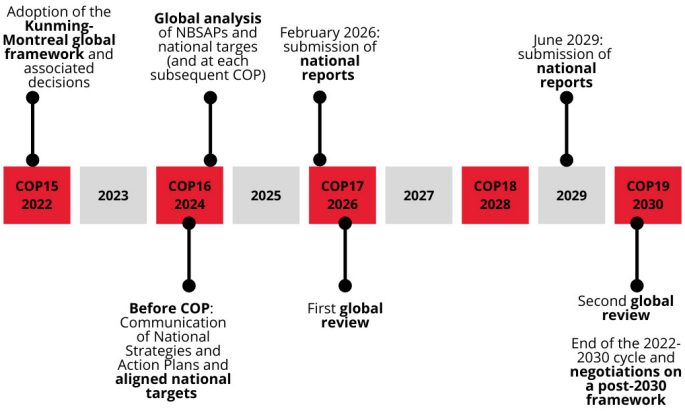


### राष्ट्रीय योजनाओं का महत्वः

- वैश्विक संरक्षण लक्ष्यों की दिशा में प्रगति की निगरानी के लिए राष्ट्रीय जैव विविधता योजनाएँ आवश्यक हैं। हालाँकि, कई देशों ने कम महत्वाकांक्षी योजनाएँ प्रस्तुत की हैं जो लक्ष्यों को रेखांकित करती हैं, लेकिन उन्हें प्राप्त करने के लिए स्पष्ट रणनीतियाँ प्रदान नहीं करती हैं।
- राष्ट्रीय जैव विविधता रणनीतियाँ और कार्य योजनाएँ (NBSAP) की धीमी प्रस्तुति जैव विविधता हानि से निपटने के लिए वैश्विक समुदाय की प्रतिबद्धता के बारे में चिंताएँ पैदा करती हैं।
- कोलंबिया के पर्यावरण मंत्री ने इन देरी के पीछे के कारणों को समझने की आवश्यकता पर बल दिया, और कहा कि सीमित वित्तपोषण और सरकारी बदलाव प्रगति को बाधित कर सकते हैं।

### जैव विविधता और जलवायु परिवर्तन को जोड़नाः

- COP16 की चर्चाएँ जैव विविधता और जलवायु परिवर्तन के बीच संबंधों पर भी केंद्रित हैं। पारिस्थितिकी तंत्र के क्षरण से जलवायु परिवर्तन के प्रभाव और भी गंभीर हो रहे हैं, जबकि वैश्विक तापमान में वृद्धि से जैव विविधता को खतरा उत्पन्न हो रहा है।
- उदाहरण के लिए, महासागरों की वर्तमान स्थिति, जिसने बड़े पैमाने पर विरंजन की घटनाओं का सामना किया है, इन मुद्दों की परस्पर संबद्धता को दर्शाती है। जैसे-जैसे संवाद जारी है, राष्ट्रों के लिए अपने जैव

विविधता एजेंडे को अपनी जलवायु कार्य योजनाओं के साथ संरेखित करना आवश्यक है।

### निष्कर्ष:

COP16 देशों को जैव विविधता के प्रति अपनी प्रतिबद्धताओं की पुष्टि करने, साथ ही वित्तपोषण और कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण अंतराल को संबोधित करने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है। 2030 के लक्ष्यों की समय-सीमा निकट आने के साथ, पूर्व में की गई प्रतिबद्धताओं को वास्तविक प्रगति में बदलने के लिए समन्वित कार्रवाई की आवश्यकता है। वैश्विक समुदाय को यह पहचानना चाहिए कि पारिस्थितिकी तंत्र का स्वास्थ्य जीवन को बनाए रखने और एक व्यवहार्य भविष्य को सुरक्षित करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। साथ ही, जैव विविधता के निरंतर नुकसान को रोकने के लिए की गई प्रतिबद्धताओं और उन पर की गई कार्रवाइयों की निगरानी करना आवश्यक होगा।

# पॉवर पैक्ड न्यूज

## चौथी परमाणु पनडुब्बी एस-4

भारत ने विशाखापत्तनम में शिप बिल्डिंग सेंटर से अपनी चौथी परमाणु पनडुब्बी, एस-4 को सफलतापूर्वक लॉन्च किया है। यह अरिहंत श्रेणी की पनडुब्बी एक साथ आठ K-4 बैलिस्टिक मिसाइलों को लॉन्च करने में सक्षम है, जिसकी रेंज 3,500 किलोमीटर है।

**अरिहंत श्रेणी की पनडुब्बियों के बारे में:**

भारत के परमाणु ऊर्जा चालित बैलिस्टिक मिसाइल पनडुब्बी (SSBN) कार्यक्रम के तहत रूस की सहायता से अरिहंत श्रेणी की छह पनडुब्बियों का निर्माण किया जा रहा है:

- **INS अरिहंत:** भारत की पहली बैलिस्टिक मिसाइल पनडुब्बी INS अरिहंत को 26 जुलाई, 2009 को लॉन्च किया गया था। INS अरिहंत को 2016 में नौसेना में शामिल किया गया था और यह 750 किलोमीटर की रेंज वाली K-15 बैलिस्टिक मिसाइलों को ले जाने में सक्षम है।
- **INS अरिघात:** अरिहंत श्रेणी की दूसरी पनडुब्बी, INS अरिघात को INS अरिहंत की तुलना में दोगुनी संख्या में मिसाइलों को ले जाने के लिए डिजाइन किया गया था। इसे 2017 में लॉन्च किया गया था। INS अरिघात को 29 अगस्त, 2024 को नौसेना में शामिल किया गया था।
- **INS अरिदमन:** तीसरी पनडुब्बी, INS अरिदमन, 23 नवंबर, 2021 को लॉन्च की गई थी। यह पनडुब्बी INS अरिहंत से लगभग 13.8 मीटर लंबी है और कम से कम आठ K-4 बैलिस्टिक मिसाइलों को ले जा सकती है।

## आईएमएफ ने वित्त वर्ष 2025 के लिए भारत की जीडीपी वृद्धि दर का पूर्वानुमान 7 प्रतिशत पर बरकरार रखा

- अपनी नवीनतम विश्व आर्थिक परिदृश्य रिपोर्ट में, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने वित्त वर्ष 2024-25 के लिए भारत की जीडीपी वृद्धि दर का पूर्वानुमान 7% पर बरकरार रखा है। रिपोर्ट में 2023 में 8.2% से 2024 में 7% और 2025-26 में 6.5% तक वृद्धि दर में अनुमानित कमी पर प्रकाश डाला गया है।

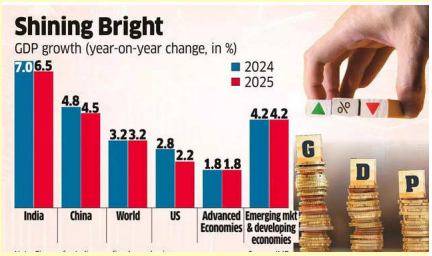


- यह मंदी मुख्य रूप से कोविड-19 महामारी के दौरान बनी दबी हुई मांग में कमी के कारण है, क्योंकि अर्थव्यवस्था अपने संभावित विकास स्तरों पर वापस समायोजित हो रही है।
- वैश्विक स्तर पर, आईएमएफ को उम्मीद है कि 2024 और 2025 दोनों में आर्थिक वृद्धि दर 3.2% पर स्थिर रहेगी। मुद्रास्फीति घट रही है, जिसका 2025 के अंत तक 3.5% तक गिरने का अनुमान है, जोकि आर्थिक स्थिरता के लिए अभी भी जोखिम हैं। इन जोखिमों में क्षेत्रीय संघर्षों में संभावित वृद्धि, व्यापार नीतियों में बदलाव और लंबे समय तक मौद्रिक स्थितियों के कठोर रहने की संभावना शामिल है।
- आईएमएफ की रिपोर्ट भारत में आर्थिक विकास को समर्थन देने और महामारी से उबरने के दौरान कमजोरियों को दूर करने के लिए प्रभावी नीति उपायों के महत्व को रेखांकित करती है।

## न्यायमूर्ति संजीव खन्ना

- हाल ही में, न्यायमूर्ति संजीव खन्ना को भारत के 51वें मुख्य न्यायाधीश के रूप में नियुक्त किया गया है और वे 11 नवंबर, 2024 को न्यायमूर्ति डी. वाई. चंद्रचूड़ की जगह लेंगे, जो आयु सीमा पूरी होने पर सेवानिवृत्त हो रहे हैं। न्यायमूर्ति खन्ना का कार्यकाल छह महीने से थोड़ा अधिक होगा, जो

13 मई, 2025 को समाप्त होगा।

**महत्वपूर्ण योगदान:**

- **चुनावी बॉन्ड योजना:** 2024 में, वे उस पीठ का हिस्सा थे जिसने चुनावी बॉन्ड योजना को असंवैधानिक करार दिया था, जिसमें राजनीतिक फंडिंग में पारदर्शिता की आवश्यकता पर जोर दिया गया था।
- **अनुच्छेद 370:** वे पांच न्यायाधीशों वाली पीठ में शामिल थे जिसने अनुच्छेद 370 को निरस्त करने को बरकरार रखा, जिसने जम्मू और कश्मीर के विशेष दर्जे को हटा दिया।
- **सर्वोच्च न्यायालय द्वारा तलाक:** 2023 में, उन्होंने 'विवाह के अपरिवर्तनीय विघटन' की अवधारणा के आधार पर अनुच्छेद 142 के तहत सीधे तलाक देने के सर्वोच्च न्यायालय के अधिकार की पुष्टि की।
- **मुख्य न्यायाधीश के लिए आरटीआई:** 2019 में, उन्होंने फैसला सुनाया कि भारत के मुख्य न्यायाधीश का कार्यालय आरटीआई अनुरोधों के अधीन हो सकता है, यह फैसला न्यायिक पारदर्शिता और गोपनीयता के बीच संतुलन को उजागर करता है।

## यात्रा रुझान रिपोर्ट

- हाल ही में अंतरराष्ट्रीय यात्रा सेवा स्काईस्कैनर द्वारा जारी 'यात्रा रुझान रिपोर्ट' के अनुसार, शिलांग 2025 में भारतीय यात्रियों के लिए सबसे लोकप्रिय गंतव्य के रूप में उभरा है, जिसने बाकू, अजरबैजान को पीछे छोड़ दिया है। यह वार्षिक रिपोर्ट इस बात पर प्रकाश डालती है कि 66% भारतीय आने वाले वर्ष में 'अधिक यात्रा' करने की योजना बना रहे हैं।
- 'पूर्व का स्कॉटलैंड' के रूप में जाना जाने वाला शिलांग रिपोर्ट में शामिल एकमात्र भारतीय शहर है, जिसके बाद बाकू और मलेशिया का लैंगकावी है। रिपोर्ट में सऊदी अरब के अल-उला, नॉर्वे के ट्रोम्सो और उज्बेकिस्तान के ताशकंद जैसे उल्लेखनीय अंतरराष्ट्रीय गंतव्य भी शामिल हैं।
- इसके अलावा, 'बेस्ट वैल्यू डेस्टिनेशन' नामक एक नई श्रेणी जारी की गई है, जो पिछले वर्ष के दौरान भारत से एयरलाइन लागत में महत्वपूर्ण बचत प्रदान करने वाले स्थानों को प्रदर्शित करती है।
- कजाकिस्तान का अल्माटी इस सूची में शीर्ष पर है, जहां उड़ान लागत में 44% की कमी आई है। इंडोनेशिया में जकार्ता 27% की कमी के साथ दूसरे स्थान पर है, जबकि मलेशिया में कुआलालंपुर 19% की गिरावट के साथ तीसरे स्थान पर है। यह रिपोर्ट भारतीय पर्यटकों की बदलती यात्रा प्राथमिकताओं पर प्रकाश डालती है, जिसमें नए गंतव्यों और बजट-अनुकूल विकल्पों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

## न्यायमूर्ति याह्या अफरीदी को पाकिस्तान का अगला मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया गया

- न्यायमूर्ति याह्या अफरीदी को एक विशेष संसदीय समिति द्वारा पाकिस्तान का अगला मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया गया है। समिति ने उन्हें सर्वोच्च न्यायालय के तीन सबसे वरिष्ठ न्यायाधीशों में से चुना है। यह निर्णय हाल ही में पारित 26वें संविधान संशोधन के बाद लिया गया है, जिसने न्यायपालिका में महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं।
- न्यायमूर्ति अफरीदी न्यायमूर्ति मंसूर अली शाह का स्थान लेंगे।
- समिति का निर्णय अब प्रधानमंत्री के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा और उसके बाद अंतिम मंजूरी के लिए राष्ट्रपति के पास भेजा जाएगा। यह नियुक्ति चल रहे सुधारों के बीच पाकिस्तान की न्यायपालिका के नेतृत्व में एक महत्वपूर्ण विकास को चिह्नित करती है।